स्वतन्त्रता संग्राम के सन्त सिपाही : महन्त दिग्विजयनाथ

डॉ. प्रदीप कुमार राव

श्री गोरक्षनाथ के पीठाधीश्वर युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी स्वतन्त्रता संग्राम के सन्त सिपाही थे। 1920 ई. में महात्मा गांधी के राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित होकर उन्होंने विद्यालय की पढ़ाई का परित्याग कर दिया तथा स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। 1920 में महात्मा गांधी के गोरखपुर में आयोजन को सफल बनाने के लिए युवा नान्हू सिंह (दीक्षा के पूर्व नाम) ने 'वालेन्टियर कोर' नामग संगठन बनाया। महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन के सक्रिय सैनिक थे। प्रसिद्ध चौरी–चौरा काण्ड के नेतृत्वकर्ता थे। चौरी–चौरा काण्ड में उन्हे फाँसी की सजा हुयी, महामना मदन मोहन मालवीय की योग्यतम पैरवी से उपरी न्यायालय से मुक्त हुए। कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति से दुःखित होकर हिन्दू महासभा की सदस्यता ली, और आजीवन हिन्दू महासभा के माध्यम से देश–समाज के बहुआयामी मुद्दों पर सक्रिय रहे।

महन्त दिग्विजयनाथ नेपाल राज–परिवार के धर्मगुरु थे। नेपाल के राजवंश पर महायोगी गोरक्षनाथ एवं नाथपंथ का व्यापक प्रभाव रहा है। महायोगी गोरखनाथ का प्रतीक खड़ाऊँ अथवा कटार एवं श्री गोरक्षनाथ जी का नाम आज भी नेपाल की मुद्राओं/नोटों पर उत्कीर्ण है। फलतः महन्त दिग्विजनाथ भारत–नेपाल सम्बन्धों की एक मजबूत कड़ी थे। धर्माधिष्ठित राजनीति के प्रबल पक्षधर दिग्विजयनाथ जी 'हिन्दुत्त्व ही भारत की राष्ट्रीयता है' के मंत्रद्रष्टा थे।

महन्त दिग्विजयनाथ जी ने साध–सन्तों की सामाजिक–राष्ट्रीय भूमिका को मजबूती से रेखांकित किया। बारह हिस्सों में विभाजित योगियों को संगठित कर अखिल शेष बारह पंथ योगी महासभा बनाकर सभी को एक साथ लाए। उन्होंने उद्घोष किया कि जब देश और समाज संकट में हो तो हिमालय की कन्दराओं अपने मठ–मन्दिरों की एकान्तिक साधना को त्यागकर हमें समाज को योग्य नेतृत्व देना चाहिए। राष्ट्रधर्म स सभी धर्म से श्रेष्ठ है। महन्त दिग्विजयनाथ जी पांथिक उपासना पद्धतियों की स्वतन्त्रता के साथ भारत के सनातन धर्म एवं हिन्दुत्व में उन सभी पांथिक परम्पराओं एवं उपासनाओं के एकाकार स्वरूप के उद्घोषक थे। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद उनका अभिष्ट था।

महन्त दिग्विजयनाथ ने श्री गोरक्षनाथ मन्दिर के स्वरूप एवं उसकी सामाजिक राष्ट्रीय–धार्मिक भूमिका में युगान्तरकारी परिवर्तन किया। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी की प्रेरणा उनका पाथेय बना। लोक–कल्याण श्री गोरखनाथ मन्दिर की साधना का केन्द्र बिन्दु बन गया। शिक्षा और स्वास्थ्य के अभाव से जूझ रहे इस पूर्वी उत्तर प्रदेश में महन्त दिग्विजयनाथ ने इसी को सेवा का माध्यम बना दिया।

1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्ष परिषद की नींव डालकर महन्त दिग्विजयनाथ जी ने शिक्षा–चिकित्सा के रूप में नर–सेवा का यज्ञ प्रारम्भ किया। भारत को स्वतन्त्र होते समय गोरखपुर में पूर्ण स्वदेशी शिक्षा–संस्थान का माडल खड़ा हो चुका था। 1948 में महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की स्थापना कर गोरखपुर को श्री गोरक्षपीठ ने उच्च शिक्षा का केन्द्र बना दिया। अब विश्वविद्यालय की स्थापना का स्वप्न पूर्ण करने में दिग्विजयनाथ जी प्रयत्नशील थे। अपने उपर्युक्त दोनो महाविद्यालयों की नींव पर उन्होंने अन्तः गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना का संकल्प पूरा किया। महिला शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, शिक्षण–प्रशिक्षण तथा चिकित्सा शिक्षा एवं चिकित्सा के संस्थान महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने उन्हीं की प्रेरणा से खोले एवं अनवरत इस दिशा में श्री गोरक्षपीठ सक्रिय है। महन्त दिग्विजयनाथ गोरक्षपीठ के पीठाधिपति होने के साथ–साथ युगप्रवर्तक संन्यासी थे।

डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह
प्राचार्य
दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज